भरी दोपहरी में अंधेरा

हम भारतीय ज्योतिष के पीछे दीवाने हैं, क्या हम वाकई इक्कीसवीं सदी में जी रहे हैं

जयंत नार्लीकर

मैं उस समय काफी हताश हो जाता हूं, जब कोई मुझे फलित ज्योतिष का विशेषज्ञ समझ लेता है और भाग्य पर ग्रहों के नियंत्रण के बारे में सवाल पूछने लगता है। पूछने वाला कोई अनपढ़ गंवार नहीं होता। वह पढ़ा-लिखा, मोबाइलधारी भारतीय नागरिक होता है। क्या वह इस बात से अनजान होता है कि वैज्ञानिक ज्योतिष को गंभीरता से नहीं लेते?

यह विचार कि ग्रह इंसान का भविष्य तय करते हैं, प्राचीनकाल से चला आ रहा है। इसकी जड़ें बेबीलोनियाई और यूनानी संस्कृतियों में भी देखी जा सकती हैं, हालांकि वेदों में इसका जिक्र नहीं मिलता। रात में अंतरिक्ष का नजारा लेने वालों ने पाया था कि सितारों के क्रमबद्ध और व्यवस्थित खगोलीय ढांचे में कुछ चीजें गतिमान हैं।

वे नियमित रूप से कभी आगे तो कभी पीछे चलती रहती हैं। यूनानियों ने इन ग्रहीय पिंडों को अपनी भाषा में प्लेनेट यानी घुमक्कड़ कहा। ये घूमते क्यों थे? इस जिज्ञासा को शांत करने के लिए वैज्ञानिक प्रवृति के प्रेक्षकों ने दार्शनिक अरस्तू का अनुसरण किया। उन्होंने ग्रहों की गति को एक ज्यामितीय रूप से परिभाषित ढांचे में रखने का प्रयास किया, जिससे घुमक्कड़ी के पीछे एक पैटर्न नजर आने लगा।

लेकिन अवैज्ञानिक प्रवृत्ति के लोगों ने माना कि ग्रह अपनी इच्छाशक्ति के मुताबिक विचरण करते हैं। इस धारणा से उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि ग्रहों की इच्छाशक्ति धरती के नश्वर प्राणियों पर भी असरदार होती है। यह विश्वास फल-फूलकर एक सिस्टम में तब्दील हो गया, जो आखिरकार ज्योतिष कहलाया। यह दूर-दूर तक फैला और भारत में तो इसे हाथोंहाथ लिया गया। वैज्ञानिक मार्ग में कई उतार-चढ़ाव आए।

आखिरकार कोपरनिकस, गैलीलियो और केपलर के प्रयासों ने ग्रहों की गति के पीछे असली पैटर्न ढूंढ निकाला। 17वीं सदी के पूर्वार्द्ध में केपलर के निष्कर्षों के बाद आइजैक न्यूटन ने गुरुत्व के नियम की खोज की। आज हम अच्छी तरह जानते हैं कि ग्रह क्यों चलते हैं। उनके पास कोई इच्छाशक्ति नहीं होती, बल्कि वे निष्क्रिय प्रणालियां हैं, जो सूर्य के चारों ओर गणितीय तौर पर तय कक्षाओं में चक्कर लगाती हैं। आज हमारे इंजीनियर और वैज्ञानिक ऐसे अंतरिक्ष यान छोड़ सकते हैं, जो एक निश्चित समय में किसी ग्रह के निश्चित स्थान पर जा टिकेंगे। इस तरह न सिर्फ ग्रहों के रहस्य का पर्दा उठा है, बल्कि उन्हें भौतिक वस्तु और सौरमंडल का एक हिस्सा मानकर उनकी जांच भी की जा रही है।

ऐसे में इंसान पर ग्रहों के प्रभाव की बात करना बेतुका है। भारतीय दिलो-दिमाग में ज्योतिष उतनी ही गहराई तक समाया है, जितनी कि जाति व्यवस्था। मैंने 40 से ज्यादा देशों की यात्राएं की हैं और वहां खगोलीय विषयों पर अपने विचार रखे हैं। लेकिन भारत अकेला देश है, जहां मेरे भाषण के बाद पूछे गए सवालों में से एक ज्योतिषीय विश्वास से जरूर जुड़ा होता है। हालांकि दूसरे देशों के अखबारों में भी राशियों पर आधारित भविष्यवाणियां छपती हैं, लेकिन सिर्फ भारत में ये भविष्यवाणियां गंभीरता से ली जाती हैं। पुराने घर से नए घर में कब प्रवेश करना चाहिए? किसी यात्रा पर निकलने के लिए शुभ मुहूर्त कौन सा है? कार या बाइक खरीदने के लिए क्या मौजूदा समय ठीक है? क्या शादी के लिए जन्मकुंडली मेल खा रही है? यही नहीं, मुख्यमंत्री के शपथ ग्रहण समारोह की व्यवस्था में भी ग्रहों की दशा पर चर्चा होने लगती है। ज्योतिष में भरोसा रखने

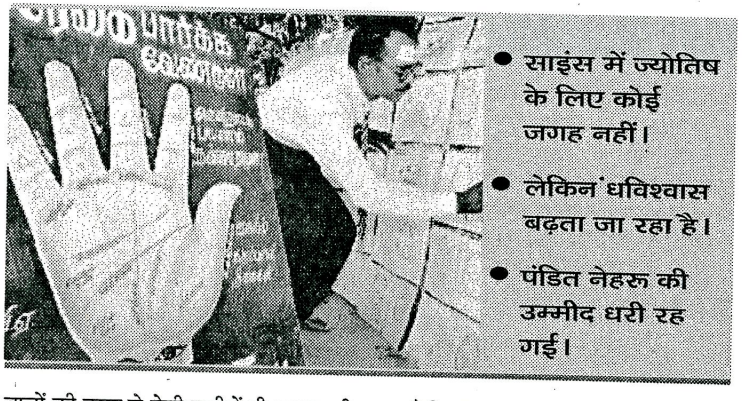

- साइंस में ज्योतिष के लिए कोई जगह नहीं।
- लेकिन अंधविश्वास बढ़ता जा रहा है।
- पंडित नेहरू की उम्मीद धरी रह गई।

वालों की तरफ से ऐसी दलीलें दी जा सकती हैं कि हो सकता है, कोई ऐसा अज्ञात भौतिक परिणाम हो, जिसके जरिए ग्रह विभिन्न तरह के लोगों को उनके पैदा होने के वक्त के मुताबिक कंट्रोल करते हों। आधुनिक विज्ञान एक निश्चित समय में सब कुछ जानने का कभी दावा नहीं करता। वैज्ञानिकों ने इस संबंध में कुछ प्रयोग किए हैं, लेकिन ऐसा कोई संकेत नहीं मिला, जो इस परिकल्पना का समर्थन करता हो कि ग्रहों का इंसान पर असर पड़ता है। किसी एक दिन के कुछ अखबारों की ज्योतिष भविष्यवाणियों पर गौर कीजिए। वे एक-दूसरे से मेल नहीं खातीं।

विज्ञान ने तरक्की इसलिए की कि उसने परिकल्पनाओं और सिद्धांतों के प्रति तर्कसंगत दृष्टिकोण अपनाया। कोई भी सिद्धांत गंभीरता से तभी लिया जाएगा, जब उसकी भविष्यवाणियां सभी दृष्टिगत तथ्यों के साथ एकरूपता दिखाएं। कोई सिद्धांत आज इस कसौटी पर खरा उतर सकता है, लेकिन हो सकता है कि भविष्य में वह कुछ नए तथ्यों की व्याख्या न कर पाए। तब उस सिद्धांत में संशोधन करना होगा या उसकी जगह कोई और सिद्धांत आ जाएगा। विज्ञान के विकास में यह प्रणाली अहम भूमिका अदा करती आई है और रोजमर्रा की जिंदगी में भी हम इसका अनुसरण कर सकते हैं, भले ही हम वैज्ञानिक न हों। अगर हमसे सिर्फ इस आधार पर किसी विचार पर यकीन करने के लिए कहा जाए कि परंपराएं वैसा कहती हैं, तो हमें बगावत करनी चाहिए। हमें जांच करनी चाहिए कि क्या उन विचारों के समर्थन में कोई तथ्यगत सबूत हैं। यह वैज्ञानिक दृष्टिकोण है। अगर इसके साथ हम ज्योतिष की जांच करेंगे तो उसका वजूद ही मिट जाएगा।

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपनी किताब *डिस्कवरी ऑफ इंडिया* में वैज्ञानिक दृष्टिकोण की वकालत की थी। उन्होंने इस बात पर अफसोस जाहिर किया कि हम पर परंपराएं हावी हैं। इसकी वजह से बुद्धिमान लोगों की तर्क शक्ति भी काम करना बंद कर देती है।

उन्होंने उम्मीद जताई कि राजनीतिक आजादी सब कुछ बदल देगी। लेकिन वह उम्मीद धरी की धरी रह गई। आजादी के छह दशक बाद भी अज्ञानता और अंधविश्वास बढ़ता ही जा रहा है। जरा उस घटना को याद कीजिए जब खबर फैली कि गणेश जी की मूर्ति दूध पी रही है, तो लोगों की क्या प्रतिक्रिया थी। यह सिर्फ भारत में होता है कि इंटरनैशनल क्रिकेट की रिपोर्टिंग करने वाले टीवी चैनलों के पैनल में सीनियर क्रिकेटरों और विशेषज्ञों के बीच टैरो कार्ड रीडर भी बैठे होते हैं, जो किसी मैच के नतीजे की भविष्यवाणी करते हैं। आज ज्योतिष में विश्वास, साधुओं के चमत्कार और वास्तुशास्त्र जोरों पर हैं, जिसकी नेहरू जी ने उम्मीद नहीं की थी। वैज्ञानिक दृष्टिकोण का उनका सपना ताक पर रख दिया गया है। सवाल पैदा होता है कि क्या हम वाकई 21वीं सदी में जी रहे हैं या फिर 18वीं सदी में?

(लेखक देश के प्रमुख खगोल वैज्ञानिक हैं)